शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

राजनीतिक गतिविधियों में मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

प्राप्तिः 08.10.2024
स्वीकृतः 20.12.2024

81

डॉ अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र)
एस0डी0 कॉलेज,मुजफ्फरनगर
Email: anilkumar.sdcollege@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में राजनीतिक परिवेश पर मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। आज मीडिया व्यक्ति के चारों और के परिवेश को निधारित कर रही है। भारत के स्वाधीन होने के बाद सबसे अधिक प्रयास भारत के लोकतान्त्रिक व्यवस्था मजबूत करने में किया गया। उस दौरान भारतीय मीडिया का जो भी स्वरूप मौजूद था उसके सामने सबसे बड़ा लक्ष्य था देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती में सहयोग देना। सामाजिक व्यवस्था के अनुसार कार्यकर्ताओं की बहुलता होती है जो एक स्थिति में एक दूसरे से अन्तः क्रिया करते हैं। इस समय व्यवस्था में अनेक उपव्यवस्थाएँ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व्यक्तिगत आदि होती हैं जिनकी रूपरेखा वृहत् सामाजिक व्यवस्था के समान ही होती हैं। भारतीय समाज धर्म, जाति, भाषा, प्रजाति आदि दृष्टि से बहुलतावादी समाज है जो अपने अलग–अलग राजनीतिक हितों में बँधी हुई है। यद्यपि संवैधानिक दृष्टि से सम्पूर्ण भारत एकता और अखण्डता के आदर्श से अलंकृत है परन्तु इसके निवासियों के राजनीतिक हित, राजनीतिक चेतना एवं मतदान व्यवहार में बहुरंगी विविधता देखने को मिलती हैं परन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अस्मिता के लिए सम्पूर्ण भारत एकता की कड़ी में बंधा है। चुनाव एवं निर्वाचन प्रक्रिया से सम्बंधित एक अन्य पहलू मतदान आचरण है।

मुख्य शब्द

राजनीतिक गतिविधिया, राजनीतिक चेतना, मीडिया, लोकतंत्र, मतदान, जनमत व्यवहार आदि।

प्रस्तावना

आज राजनीतिक गतिविधियों में मीडिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सूचना और संचार प्रोद्यौगिकी के दौर में राजनीतिक सोच को प्रभावित कर रही है। इतिहास गवाह है कि दुनिया के अधिकांश देशों में जब बदलाव की लहर चलती है तब जनमत के दबाव में लोकतान्त्रिक व्यवस्था के बगैर भी बदलाव हुये हैं। लोकतंत्र का जन्म ही जनमत की इस शक्ति के बल पर प्राप्त हुआ है और यह तथ्य स्वयंसिद्ध है कि लोकतंत्र की सफलता जनमत के सहयोग के बगैर बिलकुल भी संभव नहीं है। दूसरी तरफ मीडिया वह महाशक्ति है जो दुनिया पर सबसे अधिक प्रभाव डाल रही और उसके बदलाव को दिशा दे रही हैं।

मीडिया ने इस क्षेत्र में बड़े बड़े कार्य भी किए लेकिन कालांतर में मीडिया के सामने जब कोई बहुत बड़ा लक्ष्य नहीं था तब धीरे–धीरे मीडिया का राजनीति के संबंध निर्मित होने लगा। हालांकि इससे पहले भी राजनीति और मीडिया के संबंध थे परंतु यह संबंध स्वाधीनता आन्दोलन में एक–दूसरे के सहायक के संबंध के रूप में थे। स्वतंत्रता के बाद इन सम्बन्धों में काफी परिवर्तन आया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मीडिया में राजनीतिक प्रभाव का असर दिखने लगा। गाँव और दूरदराज की खबरें उनके लिए बहुत महत्व नहीं रखती थी। वस्तुतः आजादी के बाद मीडिया ने बहुपक्षीयता से एक पक्षीय रूझान किया। यानी राजनीतिक खबरें ज्यादा स्थान लेने लगी। चुनाव एवं निर्वाचन प्रक्रिया से सम्बंधित एक अन्य पहलू मतदान आचरण है। यह विदित है कि मतदान व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का सामूहिक निर्णयों में समाहार करने का एक साधन है। जनमत व्यवहार से अभिप्राय मतदाता के मत देने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन से है।

साहित्य समीक्षा

Pranoy Roy, Dorab R,Sopariwal 2019 के आम चुनाव से ठीक कुछ पहले प्रकाशित हुई थी। यह किताब मुख्यतः आम वोटरों के चुनावों में भूमिका पर प्रकाश डालती है। भारत का वह गरीब और बंचित तबका जो हाशिये पर है वहीं चुनावों में सब से बढ़ चढ़कर हिस्सा लेता है और यही भारतीय चुनावों की खूबसूरती और लोकतंत्र की मजबूती का आधार है।

Shivam Shankar singh, 2019 यह किताब राजनीति और चुनाव के परंपरागत विषयों से काफी हटकर है परंतु वर्तमान समय में चुनाव पर काफी प्रभाव डालने वाले विषयों पर लिखी गई यह किताब मुख्यतः सोशल मीडिया के माध्यम से और आंकड़ों का विश्लेषण करके चुनाव पर कैसे प्रभाव डालें इस पर आधारित है।

Rajdeep Sardesai, 2019 यह पुस्तक मोदी सरकार की दुबारा सत्ता में आने के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालती है। लेखक के अनुसार मोदी सरकार का दोबारा सत्ता में आना एक चमत्कार कथा कुछ लोगों के लिए पूर्व निश्चित परिणाम था। लेखक आगे कहते हैं कि परिणाम की विवेचना करना बहुत जल्द जरूरी है क्योंकि ऐसे कौन से कारण हैं जिसकी वजह से भाजपा एक बार फिर प्रचंड बहुमत लाने में सफल हुई। चुनाव किन मुद्दों पर आधारित है। चुनाव में सबसे बड़ा मुद्दा विकास या फिर राष्ट्रीय गौरव । राजदीप सरदेसाई ने इस पुस्तक को बड़े सरल शब्दों में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है तथा यह पुस्तक हमें 2019 के चुनाव में तो हम कह सकते हैं कि 2014 के चुनाव ने भारत को बदला परंतु 2019 के चुनाव में नए भारत की नीव डाली।

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी 2017 हिंदी पत्रकारिता का इतिहास पुस्तक में भारतवर्ष में पत्रकारिता के प्रवेश के साथ ही हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत हुई। भारत में छापेखाने पहले ही आ चुके थे। बंबई में सन् 1674 में एक प्रेस की स्थापना हुई और मद्रास में सन् 1772 में एक प्रेस स्थापित हो चुका था। उस समय भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों के सामने अनेक समस्याएँ थीं, जबकि वे नया ज्ञान अपने पाठकों को देना चाहते थे। उस काल में ज्ञान साथ–साथ समाज–सुधार की भावना भी उन लोगों में थी। सामाजिक सुधारों को लेकर नए और पुराने विचारवालों में अंतर भी होते थे, जिसके कारण नए–नए पत्र निकाले गए। हिंदी के प्रारंभिक संपादकों के सामने एक समस्या यह भी थी कि भाषा शुद्ध हो और सबको सुलभ हो।

राजीव रंजन 2013 ने इस पुस्तक में राजनीति की स्वतंत्र सत्ता, भारतीय समाज में परिवर्तन लाने में शासन की सक्रिय भूमिका, सामाजिक परिवर्तन लाने में शासन की क्या नीतियां व कार्यक्रम होंगे जिससे सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है एवं इस परिवर्तन का राजनीतिक परिदृश्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा, भारतीय राजनीति की अपनी शक्तियों, पश्चिमी ढांचे के वर्ग हितों के समुच्चयीकरण और आर्थिक शक्तियों की प्रभुता में मार्क्सवादी ढांचे का अन्य ढांचे से भिन्नता का वर्णन किया गया है।

हिमांशु शेखर 2012 ने भारत में मीडिया की भूमिका पिछले दशको में बहुत महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है परंतु इस बदलाव में मीडिया ने अपने स्वरूप को लेकर निष्पक्षता से कितना निर्वाह किया है यह समझने वाली बात है। यह भी शासक जातियों के वर्चस्व को बनाए रखने का माध्यम बन गया है। मीडिया सामाजिक हित के महत्वपूर्ण मुद्दों को उपेक्षित करके अनर्गल बहसों को हवा देकर जनता का ध्यान बंटाने की कोशिश कर रहा है। पुरातनपंथी दकियानूसी, अंधविश्वासी संस्कारों को वैज्ञानिक तकनीक के सहारे पुनर्स्थापित करने की कोशिश मीडिया द्वारा की जा रही है। मीडिया का प्रबंध तंत्र, प्रचार तंत्र, प्रसार तंत्र अपने जातिगत और वर्गगत हितों की पूर्ति करता है। मीडिया लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में कार्य करें तभी उसकी सार्थकता है अन्यथा उसकी छवि शासन जातियों के भोंपू के रूप में बनी रहेगी। लोकतंत्र के प्रमुख स्तंभ के रूप में मीडिया निष्पक्ष भूमिका का निर्वाह करे एवं सरकार व नागरिकों के बीच सेतु के रूप कार्य करके लोकतंत्र को मजबूत कर सकते हैं।

ममता तिवारी 2012 ने पुस्तक में चुनाव लोकतंत्र का अहम हिस्सा है। बगैर चुनावी प्रक्रिया के कोई भी लोकतंत्र नहीं रह सकता है। लोकतंत्र में चुनाव और चुनाव में मीडिया की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। आजादी के बाद लोकसभा के पहले आम चुनाव से लेकर आज तक होने वाली लोकसभा चुनाव में मीडिया अपनी भूमिका को बढ़ाती जा रही है। मीडिया के वर्चस्व कायम है और आने वाले दिनों में इसकी भूमिका और जनता की आवाज को समाहित किया गया है।

कालूराम परिहार 2010 ने पुस्तक में लिखा हैं कि मीडिया को दलितों की याद उसी समय आती है जब आरक्षण संबंधी मुद्दे पर विरोध को हवा देनी हो या फिर उनसे कोई व्यावसायिक राजनीतिक लाभ लेना हो। वे मानते हैं कि मीडिया दलितों के प्रति काफी असंवेदनशील है और न केवल दलित, दलित समुदाय पर अत्याचार की घटनाओं को नजरअंदाज करता है न बल्कि दलितों की उपलब्धियों और सामाजिक योगदान को भी उचित महत्व नहीं देता। वे लिखते हैं कि मीडिया में सर्वोच्च पदों पर उच्च जातियों के लोग हैं। जिनमें दलितों और आदिवासियों के लिए कोई स्थान नहीं है। राष्ट्रीय मीडिया के प्रमुख पदों में से एक पर भी दलित या आदिवासी नहीं है।

जोसेफ गाथिया 2009 पुस्तक में लेखक ने लिखा है कि सार्वजनिक दायरा हमें हमारे समुदाय में होने वाली घटनाओं एवं अपराध की जानकारी देता है और सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों से हमें परिचित कराता है। यह समाज के विभिन्न मुद्दों पर सहमति व आम राय बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। सार्वजनिक दायरा लोगों को एहसास करवाता है कि उन्हें किन मुद्दों पर विचार करना है और विभिन्न मुद्दों पर किस दृष्टिकोण से सोचना है। जनसंचार माध्यमों के कारण ही करोड़ों लोग प्रतिदिन होने वाली घटनाओं से परिचित होते हैं और उन पर विचार–विमर्श करते है।

विष्णु राजगढिया 2008 जनसंचार माध्यमों ने अपनी अहमियत से सभी को परिचित करा दिया है। इसके एक नई संस्कृति को विकसित करने की कोशिश की है जिसे मीडिया के सशक्तिकरण की संस्कृति कह सकते हैं। आज इसके कारण ही मानव अधिकारों के बहुत सारे संवेदनशील मामले सामने आए हैं। जनसंचार माध्यमों अथवा मीडिया के द्वारा आम जनता को जागरूक बनाया जाता है। जनसंचार माध्यमों या मीडिया को मानवाधिकारों के संरक्षण का एक मंच भी कहा जा सकता है। जनसंचार माध्यमों के दृष्टि तथा जनकल्याण योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभाने की सतत् प्रक्रिया चल रही है।

आधुनिक मीडिया दृष्टि 2005 में लेखक कृश्ण कुमार ने लिखा है कि संचार माध्यमों की इस अनूठी– अनोखी दुनिया का पहला सम्मेलन रेडियो था रेडियो के सम्मोहन ने पहली बार लोगों को एक–दूसरे के पास लाने की पहल की। लेखक संचार माध्यमों की अच्छाइयों व बुराइयों पर बात करते हुए विभिन्न बिन्दुओं को छूते हैं। उनके अनुसार यदि यह संस्कृति हमारे यहां पनपती भी है तो पर्याप्त समय तक नगरों तक ही सीमित रहेंगी। गांवों में जहां हमारी पचहत्तर फीसदी आबादी है वहां तक इसका जन्म और विकास बीसवीं सदी में असम्भव बात है।

सुभाष कश्यप 2005 ने पुस्तक में भारतीय राजनीति के सामाजिक आधारों का वर्णन किया गया है। भारतीय राजनीति के सामाजिक आधारों, ऐतिहासिक आधार, जाति एवं वर्ग व संप्रदाय के आधार पर राजनीतिक दलों का विश्लेषण किया गया है। राजनीतिक दलों में जनसंघ, जनता दल और वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य व बदलते राजनीतिक घटनाक्रम पर विशुद्ध विवेचन प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है। भारतीय राजनीति के विशेष क्षेत्र की विविध समस्याओं व मुद्दों को प्रकाशित किया गया है। राजनीतिक संस्थाओं प्रक्रियाओं का बदलते भारतीय राजनीतिक परिवेश में समझने का प्रयास किया गया।

रेणुका नैयर 2002 दूरस्थ संचार के क्षेत्र में तेजी से हो रही विकास के कारण परिवर्तन का संदेश देश के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचा है यह लोग विभिन्न भाषाएं बोलते हैं और विभिन्न संस्कृतियों को संजोये हुए हैं। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। दूसरी ओर विशेषज्ञों का यह मानना है कि पत्रकारों का झुकाव शहरों की तरफ अधिक होता है शहरों में घटी घटनाएं, उनकी समस्याएं और राजनीति के चक्रव्यूह आदि पत्रकारों को अधिक आकर्षित करते हैं जबकि गांवों में बिजली, पानी की समस्या,जात–पात के झगड़े, छोटे किसानों की आर्थिक दशा, खाद–बीज का न मिलना, बैंक ऋण पाने में बाधाएं, स्वास्थ्य व शिक्षा सुविधाओं का अभाव, कृषि मजदूरों और महिलाओं की समस्याएं सरकारी योजनाओं की जानकारी न होना आदि विषय हैं जिन्हें पत्रकार कभी– कभार ही छूते हैं।

जबरीमल पारीख 1996 ने पुस्तक में संचार की अवधारणा, परिभाषा और संचार के कार्य के बारे में बताया गया है। संचार के प्रकार, प्रक्रिया एवं तत्व, संचार के चरण एवं मॉडल के संबंध में वर्णन है। प्रमुख अवधारणा के रूप में संज्ञानात्मक सामंजस्य, नियामक सिद्धांत जैसे प्रभुत्ववादी सिद्धांत साम्यवादी सिद्धांत, मार्क्सवाद और मास मीडिया, सामाजिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत, और लोकतांत्रिक सहभागिता मीडिया का सिद्धांत का भी वर्णन है।

अध्धयन की उपादेयता

मीडिया ने भारत की जनता को पिछले दो दशक में सबसे अधिक प्रभावित किया है। राजनीति और उससे जुड़े कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण आम जनता तक पिछले दो दशक में खूब सम्भव हुआ है। यही नहीं नव संचार साधनों के आने से आम जनता के विचार, निर्णय और उनके सोचने समझने की क्षमता को जानने का मौका मीडिया के माध्यम से मिलने लगा। जिसे क्या पसंद आ रहा है यह मीडिया के जरिए सामने आने लगा। किसी बड़ी घटना से लेकर राजनीति के विभिन्न कार्यक्रमों का प्रसारण मीडिया के जरिए होने लगा।

अध्धयन के उद्देश्य

आज के समय में राजनीतिक और मीडिया के विभिन्न मंचों के बीच अप्रत्यक्ष एक गठजोड़ दिखाई देता है जिसके तहत मीडिया एक प्रायोजित कार्य क्रम के तौर पर लोगों की मानसिकता को प्रभावित कर रहा है। मौजूदा समय में मीडिया व्यवसायिक रूप से सामने आया है जहां वह मीडिया, पत्रकारिता से जुड़े नैतिकता और सच्चाई को पीछे रख व्यवसायिक तौर पर सबसे आगे निकलने की होड़ में लगा हुआ है। जिसका स्पष्ट प्रभाव समाज पर है और उसके जनमत पर है। इसलिए इसके सामाजिक प्रभाव पर अध्ययन जरूरी जान पड़ता है।

राजनितिक दृष्टिकोण के निर्धारण में मीडिया की भुमिका

सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही मीडिया सार्थक बनती है। सामाजिक सरोकारों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुँचाने और प्रषासन की जनहितकारी नीतियों एवं योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का दायित्व मीडिया के पास हैं। मीडिया को लोकतन्त्र में यह महत्वपूर्ण स्थान अनायास नहीं मिला है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्व को देखते हुये समाज ने यह महत्व मीडिया या पत्रकारिता को प्रदान किया हैं। किसी भी लोकतंत्र के मजबूत होने के पीछे जो सबसे बड़ी भूमिका है वह मीडिया के मजबूत होने के उपरांत ही होती है। मनुष्य सूचनाओं की व्याख्या करने में किस हद तक सक्षम होता है और उसके ऊपर सूचनाओं का कितना प्रभाव पड़ता है, यह मुद्दा हमेशा से दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, मनोविज्ञान विश्लेषकों एवं मीडिया चिंतकों को आकर्षित करता रहा है। यह विषय और भी महत्वपूर्ण बन जाता है जब सूचनाओं का प्रयोग शक्ति एवं सत्ता के निर्धारण के लिए आवश्यक औजार साबित होता है। महान यूनानी दार्शनिक सुकरात, प्लेटों या अरस्तू सभी ने अपनी शिक्षण व्यवस्था में एक राज्य व्यवस्था की कार्यप्रणाली को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। जनमत सामाजिक अंतर्क्रियाओं का प्रतिफलन है। जनमत कभी भी अचानक या तुरंत में घटने वाली घटना की तरह नही होता बल्कि इसके निर्माण में एक समयावधि भी लगती हैं। जनमत जन और मत के योग से बना है, इसलिए जनमत को समझने के लिए इन दो पदों को भी समझना अनिवार्य होगा। जन जनता शब्द को परिभाषित या व्याख्यायित करना कोई सरल कार्य नहीं हैं।

आज विभिन्न मीडिया के प्लेटफार्म धर्म के माध्यम से राजनीतिक ध्रवीकरण के माध्यम से किसी पार्टी विशेष के पक्ष में आम लोगों राय निधारित करता नजर आता है। यह सत्ताधारी पार्टी के विरोध या समर्थन पर आधारित मतदाताओं का व्यक्तिगत निर्णय होता है। जिसकी सामूहिक परिणति

जनादेश के रूप में होती है। इस जनादेश के अनुरूप ही शासक वर्ग से नीति निर्धारण एवं प्रशासक वर्ग से राजनीतिक व्यवस्था के संचालन की अपेक्षा की जाती है। मतव्यवहार जन प्रतिनिधियों में दायित्व बोध उत्पन्न करता है। राजनीतिक दलों की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित करता है। सामान्य तौर पर लोकतंत्र का अर्थ लोकप्रिय सम्प्रभुता पर आधारित शासन व्यवस्था से लिया जाता है। यह वह शासन व्यवस्था है जहां व्यवस्था का जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा संचालन होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के मिले विभिन्न अधिकार व संवैधानिक स्वाधीनता प्राप्त होती है। भारतीय लोकतंत्र के शासन व्यवस्था के तहत विभिन्न उतार चढ़ाव को देखने के बावजूद मीडिया ने वर्तमान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित की है। मीडिया की स्वतंत्र होना लोकतांत्रिक चेतना के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है, यह लोकतंत्र का आधार है। मीडिया संसार में तथा हमारे चारों ओर घटित होने वाली सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक गतिविधियों के प्रति हमें न सिर्फ जागृत करता है बल्कि वह समाज के वास्तविकता से भी परिचित कराता है। जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी तरह मीडिया भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का वह दर्पण है जो हमें जीवन के कटु सत्य और यथार्थपरक वास्तविकताओं को हमें दिखाता है या उसका प्रयास करता है।

आज चुनावी अभियान ज्यादा सुनियोजित हो गए हैं परंतु अभी भी चुनाव का मुख्य खर्च विज्ञापन एवं रैली पर ही होता है। अपने संदेशों को जनता तक पहुँचाना और उनका विश्वास जितना ही राजनीतिज्ञों का प्रमुख उद्देश्य होता है। चुनाव अभियान में राजनेता अपने भाषण द्वारा जनता को अपने हक में वोट देने का अनुनय करता है और उसे अपना भाषण ऐसे तैयार करना होता है जिससे वो अपने लिए ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं का विश्वास जीत सकें। जनता उसी राजनेता पर विश्वास करती है जिससे वो एक जुड़ाव महसूस करती है और जो अपने चरित्र एवं अपने पूर्व कार्यों से एक भरोसेमंद पात्र साबित हो। मीडिया के प्रत्यक्ष एवं सीधे प्रभाव को पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकता क्यूँकि विश्व के अनेकों चुनाव अभियान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मीडिया जनमत निर्माण की आँधी को हवा देने में सफल होती है। कोई भी चुनाव अभियान सिर्फ रैली, भाषण या मीडिया के दम पर नही जीता जा सकता, ओपिनीयन लीडर्स का एक खास महत्व है। सभी राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता उस पार्टी के प्रचारक की भूमिका निभाते हैं जो अपने काम एवं अपनी बातों से जनता को अपनी ओर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

मीडिया लोकतांत्रिक व्यवस्था के छिद्रबिन्दुओं को उजागर कर सरकार को उन्हें दूर करने के लिए प्रेरित करती है और सरकार को अधिक जवाबदेह, उत्तरदायी और नागरिकों के अनुरूप बनाने के सहायता करती है। मीडिया के बिना लोकतंत्र बिना पहिये के वाहन के समान है। मीडिया ही स्वस्थ जनमत निर्माण का साधन है। मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों एवं सदस्यों के नैतिक अवमूल्य एवं भ्रष्टाचार को अपने स्टिंग आपरेशन के द्वारा सबके सामने प्रस्तुत किया है। इस तरह के सत्य अन्वेषण एवं तथ्यों की प्रस्तुति से जनता जनार्दन अपने प्रतिनिधियों के कृत्यों से न केवल अवगत होती है वरन् भविष्य के लिए सचेत भी होती है। मीडिया द्वारा किये गये विविध स्टिंग ऑपरेशन में ऑपरेशन दुर्योधन एवं आपरेशन चक्रव्यूह विशेष उल्लेखनीय हैं। मीडिया द्वारा किये गये इन आपरेशन ने हमारे सम्मुख इस तथ्य को रखा कि हमारे नेतागण किस प्रकार अपने विशेषाधिकार को कितने सस्ते

में बेचने को तैयार हैं बल्कि इससे यह भी पता चलता है कि संसद और अपने अधिकार को यह किस

सदंर्भ

1. कुमार, भारतीय राजनीति विज्ञान षोध पत्रिका, जनवरी – दिसम्बर 2010 अंक प्रथम–द्वितीय (संयुक्तांक)
2. कालूराम परिहार, मीडिया के सामाजिक सरोकार, अनामिका पब्लिषर्स, 2010
3. ममता तिवारी, चुनाव, बुक्स, लोकतंत्र और मीडिया, डायमण्ड पॉकेट 2012''
4. राजीव रंजन, चुनाव लोक सभा और राजनीति, ज्ञान गंगा, 2013"
5. रेणुका नैयर, ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिता, हरियाणा साहित्य अकादमी,2002"
6. सुभाश कष्यप, संसदीय प्रक्रिया, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2005"
7. Noam, Edward S- Herman, Manufacturing Consent, Patheon books, 1998
8. Pranoy Roy, Dorab R- Sopariwala, THE VERDICT Decoding India, selection, Penguin Random House, 2019
9. जबरीमल पारीख, जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, अनामिका प्रकाषन, 1996''
10. जोसेफ गाथिया, मीडिया और सामाजिक बदलाव, कन्सेप्ट पब्लिषिंग कम्पनी, 2009''
11. आधुनिक मीडिया दृश्टि, इंक्लेव पब्लिषर्स, 2005।